दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17–HL-**HL10**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): Anil

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): ____________________

ई-मेल पता (E-mail address): ____________________

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): ____________________

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Anil

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

और बेहतर करें

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 130 1/2

टिप्पणी (Remarks): सतत अध्ययन अपेक्षित

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

नितांत

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) विरहा बुरहा जिनि कहौ, विरहा है सुलितान।
जिस घटि विरह न संचरै, सो घट सदा मसान।।

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पंक्तियाँ कबीर के पदों के संग्रह कबीर ग्रंथावली से ली गई है, जिसका संपादन डॉ: श्याम सुंदर दास ने किया है।

व्याख्या ⇒ कबीर ईश्वर के विरह में व्याकुल हैं। वह विरह को अपने जीवन के अंग के रूप में स्वीकार करते हैं। वह विरह को राजा का दर्जा प्रदान करते हैं। उनका जीवन का एक ही उद्देश्य है, ईश्वर की प्राप्ति। वे कहते कि जिस वक्त उन्हें विरह नहीं होता, उस अवस्था में उन्हें ऐसा प्रतीत होता

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

है . जैसे कि वह मरणासन्न अवस्था में हो।

विशेष → (क) सधुक्कड़ी भाषा का प्रयोग।

(ख) भावनात्मक रहस्यवाद के दर्शन होते हैं।

(ग) ईश्वर से मिलन की तड़प दिखाई है।

(घ) अनुप्रास अलंकार का सुंदर प्रयोग किया गया है।

आंशिक 6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) तंत्रीनाद, कवित्त-रस, सरस राग, रति-रंग।
अनबूड़े बूड़े, तिरे जे बूड़े सब अंग।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पद्यखण्ड बिहारी द्वारा रचित ~~दोहा~~ 'बिहारी सतसई' लिया गया है।

व्याख्या ⇒ बिहारी कविता की उपयोगिता बताते हुए कहते हैं कि कविता का प्रयोजन आनंद उत्पन्न करना है। कविता के माध्यम से कला के सभी रूपों का वर्णन किया जा सकता है। उनका मानना है कि जो भी व्यक्ति अपने आप को कविता रूपी सागर में डुबा देता है तो उसे आनंद की अनुभूति होती है। अतः वह जीवन के वास्तविक उद्देश्य को प्राप्त करता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेलः helpline@groupdrishti.com, वेबसाइटः www.drishtiIAS.com
फेसबुकः facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटरः twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष ⇒ (क) यह ब्रज भाषा का माधुर्य है, जो इतनी गूढ़ बात को कम शब्दों में कह दिया।
(ख) इसमें कविता की उपयोगिता को दर्शाया गया है।
(ग) ध्वन्यात्मकता इसका सौंदर्य बढ़ा रही है।
(घ) बिंब योजना का सुंदर प्रयोग किया गया है।

अच्छा

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) भर भादौं दूभर अति भारी। कैसें भरौं रैनि अँधियारी।
मँदिल सून पिय अनतै बसा। सेज नाग भै धै धै डसा।
रहौं अकेलि गहें एक पाटी। नैन पसारि मरौं हिय फाटी।
चमकि बीज घन गरजि तरासा। बिरह काल होइ जीउ गरासा।
बरिसै मघा झँकोरि झँकोरी। मोर दुइ नैन चुवहिं जसि ओरी।
पुरबा लाग पुहुमि जल पूरी। आक जवास भई हौं झूरी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ → प्रस्तुत पद्यखण्ड जायसी द्वारा रचित 'पद्मावत' से लिया गया है।

व्याख्या → नागमती अपने विरह का वर्णन करते हुए कहती है कि आदौं माह में धूप उसके लिए अत्यंत कष्टकारी है। सास को जब सूर्य डूब जाता है, तब भी उस पर सूर्य की किरणों की वर्षा होती रहती है। नागमती कहती है कि जब वर्षा होती है, तो उस पर इस वर्षा का कोई प्रभाव नहीं होता है, क्योंकि वह तो अपने पति के विरह में व्याकुल है। नागमती कहती है कि उसकी आँखों से भी विरह के कारण वर्षा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

हो रही है। वह कहती है कि वर्षा के पश्चात पूर्व की हवा उसे अग्नि के समान प्रतीत हो रही है।

विशेष ⇒ (क) अवधी भाषा का प्रयोग किया गया है।
(ख) ध्वन्यात्मकता का सुंदर प्रयोग किया गया है। जैसे - घन गरजि तरासा।
(ग) 'बारहमासा ऋतु वर्णन' को आधार बनाया गया है।
(घ) बिरह का अद्वितीय वर्णन।

साधारणीकरण
सामान्यीकृत
का विरह

अच्छा।

5½/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) बिन गोपाल बैरिन भई कुंजैं।
तब ये लता लगति अति सीतल, अब भईं विषम ज्वाल की पुंजैं।।
बृथा बहति जमुना, खग बोलत, बृथा कमल फूलैं, अलि गुंजैं।
पवन पानि घनसार सँजीवनि, दधिसुत किरन भानु भइं भुंजैं।।
ए, ऊधो, कहियो माधव सों, बिरह कदन करि मारत लुंजैं।
सूरदास प्रभु को मग जोवत, अँखियाँ भईं बरन ज्यों गुंजैं।।

संदर्भ → प्रस्तुत पद्यांश सूरदास के पदों के संकलन 'भ्रमरगीतसार' से लिया गया है, जिसका संपादन आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने किया है।

व्याख्या → गोपियाँ अपने विरह का वर्णन करती हुए कहती हैं कि बिना श्री कृष्ण के ये बागान व्यर्थ हो गए हैं। जब श्री कृष्ण थे, तो तब ये अति शीतल प्रतीत होती थीं, किंतु अब अग्नि उगल रही है। जमुना के तट पर पशु पक्षी हमें शांति एवं आनंद प्रदान करते थे, किंतु अब ये भी हमें व्यर्थ प्रतीत होते हैं। गोपियां ऊधो से कहती हैं

कृपया इस स्थान पर कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कि श्री कृष्ण से कह देना कि विरह में गोपियों की दशा अत्यंत विकट हो गई है। अतः वे गोपियों को दर्शन दें।

विशेष → (क) विरह का अद्वितीय वर्णन किया गया है।
(ख) ब्रज के माधुर्य ने इन पंक्तियों की शोभा को और बढ़ा दिया है।
(ग) प्रकृति उद्दीपन विभाव के रूप में आई है।
(घ) प्रकृति एवं मनुष्य के बीच के संबंध का वर्णन किया गया है।

5½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) मेरे जाति-पाँति, न चहौं काहू की जाति-पाँति,
मेरे कोऊ काम को, न हौं काहूँ के काम को।
लोक परलोक रघुनाथ ही के हाथ सब,
भारी है भरोसो 'तुलसी' के एक नाम को।
अति ही अयानो उपखानो नहिं बूझैं लोग,
'साह ही को गोत गोत होत हैं गुलाम को'
साधु कै असाधु कै भलो कै पोच, सोज कहा,
का काहू के द्वार परौं? जो हौं सो हौं राम को।।

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पद्यखण्ड तुलसीदास द्वारा रचित 'कवितावली' के उत्तरकाण्ड से लिया गया है।

व्याख्या ⇒ तुलसीदास जातिवाद का विरोध करते हुए कहते हैं कि इन्हें न तो स्वयं की जाति एवं स्थिति से प्रयोजन है और न किसी दूसरे व्यक्ति की जाति से। न तो मैं किसी के काम का हूँ और न ही कोई दूसरा मेरे काम का है। मैं तो केवल ईश्वर (राम) के प्रति आस्था रखता हूँ। तुलसी कहते हैं कि साधु, असाधु से भी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रयोजन नहीं है, जो घाट-घाट जाता है। वह भगवान राम के गुलाम हैं। अतः वही उनका उद्धार करेंगे।

विशेष → (क) तुलसी ने इन पंक्तियों में जातिवाद का खण्डन किया है।

(ख) अवधी भाषा का प्रयोग किया गया है।

(ग) दास्य भक्ति का उदाहरण है।

(घ) अनुप्रास अलंकार का सुंदर प्रयोग किया गया है।

जातिवाद का विरोध

अच्छा

5½/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) कबीर के काव्य में निहित रहस्यवाद के प्रेममूलक, साधनामूलक एवं अभिव्यक्तिमूलक रूप पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कबीर संत काव्यधारा के ~~कबीर~~ कवि है। कबीर के काव्य में भावनात्मक एवं साधनात्मक दोनों प्रकार का रहस्यवाद देखने को मिलता है।

कबीर प्रारंभ नाथपंथ में दीक्षित थे, जिस कारण उन पर साधनात्मक रहस्यवाद का प्रभाव नजर आता है, जबकि सूफी प्रभाव के कारण भावनात्मक रहस्यवाद।

कबीर के काव्य में निहित रहस्यवाद में प्रेम संबंधी वर्णन भी देखने को मिलते है। वस्तुतः कबीर सूफी परंपरा के भावनात्मक रहस्यवाद को आधार बनाकर काव्य रचते है; तो उसमें प्रेम की तड़प देखने को मिलती है। पर प्रेम की ~~तड़क~~ तड़प ईश्वर

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के प्रति है। वह ईश्वर के विरह में व्याकुल हैं। उदाहरण के लिए -

"तलफै बिन बालम मोर जिया
दिन नहीं चैन रात नहीं निंदिया
तलफ - तलफ कै भोर किया।"

इसी प्रकार जब वह ईश्वर से एकाकार करते हैं, तो उनकी तड़प समाप्त हो जाती है और प्रेम संबंधी वर्णन करते है, जिसमें भावनात्मकता अधिक होती है -

"हमारा साहब हमन में
हमन को और इंतजारी क्या।"

इसी प्रकार कबीर प्रारंभ में हठयोग परंपरा में दीक्षित थे। ऐसे में उनके काव्य में साधनात्मक रहस्यवाद से संबंधित वर्णन मिलते हैं। वह स्वयं हठयोग के माध्यम

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

से कुण्डलिनी जाग्रत ~~करके~~ करने का प्रयास कर चुके थे। उनके काव्य में अनेक साधनात्मक रहस्यवाद संबंधी वर्णन मिलते हैं-

"अवधू गगन मण्डल घर कीजै,
अमृत झरै सदा सुख उपजै,
बंकनालि रस पीजै।"

इसी प्रकार वह साधनात्मक रहस्यवाद अर्थात हठयोग के माध्यम से ईश्वर को प्राप्त करना चाहते है। कबीर कहते है -

"कुंभ में जल, जल में कुंभ,
भीतर - बाहर ~~ब~~ पानी,
कुंभ फूटा जल - जलहिं समाना
यह तथ कहै गियानी।"

~~कबीर~~ कहीं - कहीं पर कबीर की अभिव्यक्तियों में भी रहस्यवाद का प्रभाव नजर आता है। जब वह पण्डों, मुल्लों को ललकारते है;

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तो यह शक्ति उन्हें साधनात्मक रहस्यवाद से मिलती है। इसी प्रकार उनमें साधनात्मक और भावनात्मक रहस्यवाद के माध्यम से वह हिन्दू - मुस्लिमों में समन्वय स्थापित करने में भी सफल रहे। उदाहरण के लिए-

"इन दोउअन की राह कोउ न पाई
हिन्दुअन की हिन्दुआई देखी, तुर्कन की तुरकाई।"

कबीर जब भावना प्रधान रचनाएँ करते हैं, तो उनमें काव्य में चमत्कार, श्रृंगारिकता जैसे तत्व देखने को मिलते हैं।

अतः हम कह सकते हैं कि कबीर के काव्य को उनके रहस्यवाद ने प्रभावित किया है।

अभिव्यक्ति मूलक
(रहस्यवाद के अंतर्गत आये हैं)
प्रयास ठीक है

10/20

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) सूरदास की साहित्यिक निपुणता पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सूरदास कृष्ण भक्ति काव्य धारा के शिरोमणि हैं। सूरदास ने कृष्ण का ऐसा वर्णन किया है, कि वह हिंदी साहित्य का अद्वितीय वर्णन है।

सूरदास ने कृष्ण कथा वर्णन के क्रम में उपालंभ काव्य का सृजन किया है। सूरदास ने अपनी रचनाओं में जैसा गोपियों का वर्णन किया है, वह अद्वितीय है। गोपियां कृष्ण के ~~इस~~ वियोग में इस पर व्यथित है कि वे प्रकृति से भी विरह में जलने की अपेक्षा करती है।

सूरदास ने वात्सल्य प्रेम का जैसा वर्णन किया है, वह अद्वितीय है। जैसे.
"घुटरनु चलत रेनु तन मंडित"

सूरदास की भाषा ब्रज भाषा है। ~~किंतु~~ वह ब्रज भाषा के माध्यम से कृष्ण का वर्णन करने में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सफल हुए। उनकी भाषा की समाहार क्षमता अनन्य है।

सूरदास की बिंब योजना हिंदी साहित्य में 'बिहारी' के अतिरिक्त अन्य कवियों से बेहतर है। सूरदास के काव्य में स्पर्श बिंब, श्रव्य बिंब, दृश्य बिंब इत्यादि देखने को मिलते हैं। उदाहरण के लिए

"बूझत श्याम कौन तू गोरी
कहाँ रहती,
काकी है तू बेटी, देखी नहीं
ब्रज खोरी।"

सूरदास अंधे थे, ऐसे में उन्हें किसी का क्षेत्र का विशेष ज्ञान नहीं था। किंतु उन्होंने बिंब योजना के माध्यम से अपने काव्य समर्थ बनाने में समर्थ हुए। सूरदास ने अपने काव्य में अलंकारों का अधिक प्रयोग किया है। शुक्ल जी कहते हैं कि उन्हें उत्प्रेक्षा की झक सी चढ़ जाती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

यमक अलंकार का उदाहरण दृष्टव्य है -
"चोलन वल मिलिकै कागद मसी हुई गई स्याम - श्याम की पाती"
इसके अतिरिक्त उन्होंने रूपक अलंकार का भी व्यापक प्रयोग किया है। जैसे -
"ऊधो कोकिल कूजत कानन तुम हमसों उपदेश करत हैं भस्म लगावत आनन।"
सूरदास के काव्य में वक्रोक्ति योजना अत्यधिक महत्वपूर्ण है! जो कि उनके काव्य की शोभा बढ़ाती है। जैसे -
"अब कैसहूँ निकसति नाहिं, तिरछे हैं, जू अड़े।"
ध्वन्यात्मकता, प्रतीक योजना ने भी सूरदास के काव्य की शोभा बढ़ाई है। अतः हम कह सकते हैं कि सूरदास काव्य की प्रासंगिकता उनके साहित्यिक सौंदर्य के कारण है।

बढ़िया उत्तर
9/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) आपके मत से कबीर और तुलसी में किसे 'लोकनायक' की संज्ञा देना अधिक उचित होगा? तार्किक उत्तर दीजिये। 15

कबीर और तुलसी दोनों ने ही सामाजिक संदर्भ में विशद वर्णन किया है। दोनों कवियों में किसी को चुनना अत्यंत कठिन है। कबीर या तुलसी में से किसी एक को चुनने से पहले आवश्यक है कि दोनों के कार्यों की तुलना करें।

कबीर जाति व्यवस्था एवं सांप्रदायिकता पर चोट करने में तुलसी से सशक्त सिद्ध होते हैं। जहाँ तुलसी "शूद्र, पशु नारी, सकल ताड़ना के अधिकारी" जैसा कथन कहकर शूद्रों का विरोध करते हैं। तो वहीं कबीर जाति व्यवस्था का विरोध करते हैं। जैसे_

"जाति - पाति पूछै नहि कोई
हरि को भजै, सो हरि को होई।"

तुलसी के वर्णन में आर्थिक, राजनीतिक वर्णन अधिक मिलते हैं। जबकि

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

में यह सीमित मात्रा में मिलते हैं।

कबीर भावनात्मक एवं साधनात्मक रहस्यवाद के ~~साधन~~ प्रभाव के कारण हिन्दु और मुस्लिम के समन्वय करने का प्रयास करते रहे, जबकि तुलसी ने इसका विशेष प्रयास नहीं किया।

कबीर में दार्शनिक वैविध्य अधिक है, जबकि तुलसी में इसकी मात्रा कम है।

कबीर मुक्तक की रचना करते हैं, जबकि तुलसी ने प्रबंध की रचना की है।

कबीर की भाषा सधुक्कड़ी है, जो जन जन के बीच है। वह संस्कृत को 'कूपजल' कहते हैं। जबकि ~~तुल~~ तुलसी ने अपने काव्य में अवधी को अपनाया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कबीर का दृष्टिकोण वृहद है। वह मानवेत्तर प्राणियों का भी वर्णन करते हैं। ~~जबकि~~ तुलसी भी ऐसा करते है।

कबीर शिल्प की दृष्टि से तुलसी से कम सजग है।

अतः दोनों ही लोकनायक हैं। किंतु यदि चुनना हो, तो वर्तमान में कबीर आम जन के अधिक निकट है।

अच्छा

8½/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) भ्रमरगीतसार में सूर के विरह वर्णन के संबंध में आचार्य रामचंद्र शुक्ल की मान्यताओं का उल्लेख करते हुए उससे अपनी तार्किक सहमति या असहमति प्रकट कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

~~भ्रमर~~

सूर ने भ्रमरगीत प्रसंग में गोपियों के विरह का वर्णन किया है। जहाँ कुछ समीक्षक इसे हिंदी साहित्य का अद्वितीय प्रसंग मानते हैं, तो वहीं शुक्ल जी ने इसे 'गोपियों के बैठे ठाड़े का धंधा' कहा है।

शुक्ल जी गोपियों के विरह की आलोचना करते हुए कहते हैं कि मथुरा गोपियों कुछ दूरी पर ही है, यदि गोपियों को इतना अधिक विरह है, तो वे कृष्ण से मिलने जा सकती हैं। किंतु वह विरह में व्याकुल हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

~~कहती~~ है कि ~~गोपि~~ शुक्ल जी कहते हैं कि गोपियों को विरह के अतिरिक्त जीवन में कोई काम नहीं है। अतः यह लोकमंगल की साधनावस्था के विरुद्ध है। सूर ने जबरदस्ती का विरह वर्णित किया है।

किंतु यह मानना उचित नहीं है। विरह केवल भौगोलिक दूरी के आधार पर नहीं होता है। बल्कि इसमें मानसिक दूरी का भी महत्वपूर्ण योगदान होता है।

इसके अतिरिक्त गोपियां अपने आत्मसम्मान एवं व्यक्तित्व को महत्व देती हैं, वे उनसे मिलने नहीं जाती, क्योंकि कृष्ण ने स्वयं उनसे मिलने आने का वादा किया

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

था।

शुक्ल जी का यह कहना भी उचित नहीं है कि यह मध्यकालीन विरह है। क्योंकि ~~इस~~ यह नारी स्वतंत्रता का सूचक है। जब व्यक्ति को विरह होता है, तो वह मानसिक एवं शारीरिक रूप से इतना सक्षम नहीं होता कि वह कोई कार्य कर सके।

अतः हम कह सकते हैं कि शुक्ल जी सूरदास की गोपियों के विरह पर आरोप उचित सिद्ध नहीं होता है। वस्तुतः ~~विरह~~ सीता के विरह में भौगोलिक दूरी कारण थी, किंतु गोपियों के विरह में

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मानसिक दूरी कारण करती है। अतः गोपियों का विरह हिंदी साहित्य का अद्वितीय विरह है। किंतु कहीं-कहीं गोपियों का विरह समस्याएँ उत्पन्न करता है।

अच्छा

8½ / 15

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) "'असाध्य वीणा' कविता मार्क्सवादी रचना-दृष्टि को खंडित करने का रचनात्मक उपक्रम है।" विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

असाध्य वीणा अज्ञेय की महत्वपूर्ण लंबी कविता है। इस रचना में उन्होंने मार्क्सवाद संबंधी रचना दृष्टि को खण्डित किया है।

मार्क्सवाद मानता है कि रचना का उद्देश्य समाज में क्रांति पैदा करना है, मार्क्सवाद जनसाधारण के समझने योग्य शैली का समर्थन करता है। यह प्रतीकों, अप्रस्तुत विधान का खण्डन करता है। यह रचना को आर्थिक क्रियाओं का उप-उत्पाद मानता है।

अज्ञेय ने मार्क्सवादी मान्यताओं का खण्डन किया है। अज्ञेय ने असाध्य वीणा में अपनी रचना दृष्टि स्पष्ट की है जो सृजन की अर्हता, सृजन की प्रक्रिया,

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सृजन का स्वरूप तथा सृजन के प्रभाव के माध्यम से व्यक्त होती है।

अज्ञेय ने असाध्यवीणा में दर्शाया कि किसी रचना के उद्देश्य के लिए रचनाकार में अहं का अभाव होना चाहिए। तथा वह अपने व्यक्ति का विलय करने में सक्षम हो। उदाहरण के लिए -

"राजा में कलावंत नहीं
प्रिय साधक हूँ।"

अज्ञेय ने रचना की प्रक्रिया के लिए आवश्यक है कि रचनाकार अपने आपको रचना में डुबा दे अर्थात् अपने व्यक्तित्व का विलयन कर दे।

"अज्ञेय नहीं कुछ मेरा
मैं, लो डूब गया था स्वयं
शून्य में।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अज्ञेय सृजन के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं कि सृजन वास्तव में ईश्वर की अभिव्यक्ति है। प्रियंवद कहता है- "तू उस बीन के तारों में अपने को गा अपने से गा।"

अज्ञेय सृजन के प्रभाव को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति पर रचना का भिन्न - भिन्न प्रभाव होता है। और वह संघर्ष को पैदा नहीं करता। उदाहरण के लिए - "डूब गए सब एक साथ, अलग-अलग एकाकी पार तिरे"

उपरोक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि अज्ञेय मार्क्सवादी रचना दृष्टि को खण्डित करते हैं।

अच्छा

8/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) "नागार्जुन जनजीवन, धरती व मानव प्रेम के पुजारी हैं।" विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नागार्जुन जन कवि है। वह आम जन की समस्याओं को उभारते हैं। वह समाज की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक समस्याओं का व्यापक वर्णन करते हैं।

नागार्जुन ने 'हरिजन गाथा' में ~~उन्हें~~ दलितों के शोषण संबंधी समस्या को उजागर किया है। तथा वह राजनीतिक कुरीतियों पर भी चोट करते हैं। नागार्जुन ने कांग्रेस सरकार की नीतियों पर चोट करते हुए लिखा -

"आओ रानी हम ढोएंगे तुम्हारी पालकी,
यही राय हुई है, जवाहर लाल की।"

नागार्जुन . गरीबी, पराभाव, किसान, निम्न वर्ग सभी का वर्णन करते

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

है। नागार्जुन आम जन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दर्शाते हैं और सभी विचारधाराओं का खण्डन करते हैं। उदाहरण के लिए -

"क्या है दक्षिण, क्या है वाम,
जनता को रोटी से काम।"

नागार्जुन के मानव की समस्याओं को ही नहीं उठाते बल्कि मानवेत्तर ~~प्राणियों~~ प्राणियों जैसे - जानवर इत्यादि का वर्णन करते हैं। 'अकाल और उसके बाद' में उन्होंने पशुओं की स्थिति का वर्णन करते हुए लिखा -

"कई दिनों तक चूल्हा रोया,
चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया भी सोई उनके पास।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

नागार्जुन ~~जब~~ जहाँ सौंदर्य का भी वर्णन करते हैं, तो वह गार्हस्थिक सौंदर्य तथा निम्न वर्ग के सौंदर्य को उभारते हैं। उदाहरण के लिए -

"मिलकर वे दोनों प्राणी,
दे रहे खेत में पानी।"

नागार्जुन का ~~शिल्प~~ शिल्प भी आम जन के नजदीक है। उनकी भाषा सरल एवं सहज है। वे प्रतीकों का सीमित प्रयोग करते हैं। वे बिंब भी आम जनों के बीच से उठाते हैं। व्यंग्य शैली नागार्जुन की अद्वितीय है।

अतः हम कह सकते हैं कि नागार्जुन जन जीवन, धरती व मानव प्रेम के पुजारी हैं।

बहुत अच्छा।

9/15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

SECTION 'B'

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) कौन कहता है, जीवन-संग्राम में वह हारा है। यह उल्लास, यह गर्व, यह पुलक क्या हार के लक्षण हैं? इन्हीं हारों में उसकी विजय है। उसके टूटे-फूटे अस्त्र उसकी विजय-पताकाएं हैं। उसकी छाती फूल उठी है, मुख पर तेज आ गया है।

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पंक्तियाँ हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित 'कुटज' नामक निबंध से ली गई है।

व्याख्या ⇒ द्विवेदी जी कुटज नामक पौधे का वर्णन करते हुए कहते हैं कि यह छोटा सा पौधा निरंतर संघर्ष करते हुए भी अपना अस्तित्व बनाए हुए है। अतः यह वास्तविक विजेता है। मनुष्य को इससे प्रेरणा लेनी चाहिए और अपने जीवन को विपत्तियों के साथ जीना चाहिए।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष ⇒ (क) भाषा सरल, सहज एवं बोधगम्य है।
(ख) वर्णन शैली को अपनाया गया है।
(ग) सूत्र शैली का भी प्रयोग किया गया है।
(घ) मनुष्य को प्रेरणा प्रदान करती है।

गहराई नहीं
कांउट उत्तर में

0/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) विद्यापति की चर्चा होते ही कविवर 'दिनकर' का एक प्रश्न बरबस सामने आकर खड़ा हो जाता था– "विद्यापति कवि के गान कहाँ?" बहुत दिनों बाद मन में उलझे हुए उस प्रश्न का जवाब दिया– ज़िंदगी-भर बेगारी खटनेवाले, अपढ़ गँवार और अर्धनग्नों में, कवि! तुम्हारे विद्यापति के गान हमारी टूटी झोंपड़ियों में ज़िंदगी के मधुरस बरसा रहे हैं।

संदर्भ → प्रस्तुत पंक्तियाँ फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा रचित आंचलिक उपन्यास 'मैला आँचल' से ली गई हैं।

व्याख्या → रेणु ग्रामीण जीवन में विद्यमान गरीबी का वर्णन करते हुए कहते हैं कि गांव के गरीब अपनी झोपड़ियों में विद्यापति के गीत गा रहे हैं। वस्तुतः विद्यापति के गीत व्यक्ति के जीवन में चेतना का संचार कर रहे हैं। वे निरंतर गरीबों को परभाव सहने की क्षमता दे रहे हैं। ऐसे में विद्यापति बिहार के पूर्णिया में गरीबों की झोपड़ियों में विद्यमान हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष → (क) देशज शब्दों का अधिक प्रयोग किया है।
(ख) गरीबी का मार्मिक वर्णन
(ग) गरीबों के जीवन में लोक संस्कृति के महत्व को उजागर किया गया है।
(घ) प्रश्नोत्तर - शैली का प्रयोग किया गया है।

शहरों की आर्थिक विपन्नता एवं सांस्कृतिक विपन्नता भी उजागर हुआ है

अच्छा

5½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ग) युद्ध क्या गान नहीं है? रूद्र का शृंगीनाद, भैरवी का तांडव-नृत्य और शस्त्रों का वाद्य मिलकर भैरव संगीत की सृष्टि होती है। ध्वंसमयी महामाया-प्रकृति का वह निरंतर संगीत है।

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पंक्तियाँ जयशंकर प्रसाद के 'स्कंदगुप्त' नामक नाटक से ली गई हैं।

व्याख्या ⇒ देवसेना युद्ध की महत्ता का वर्णन करते हुए कहती है कि युद्ध भी एक प्रकार का संगीत है। जिस प्रकार भगवान शिव तांडव करते है, रुद्र शृंगीनाद और शस्त्रों का वाद्य मिलकर संगीत का सृजन करता है। यह प्रकृति ध्वंसमयी है। ऐसे में यह स्वाभाविक है कि इस पृथ्वी पर युद्ध की स्थिति बनी रहेगी। अतः युद्ध से डरने के बजाय उससे निपटने के लिए तैयार रहना चाहिए।

जयमाला कहती है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष → (क) नवजागरणवादी चेतना निहित है।

(ख) नव्य वेदांत दर्शन का प्रभाव है।

(ग) भाषा तत्समी होते हुए भी सरल सहज एवं बोधगम्य है।

(घ) ध्वन्यात्मकता का प्रयोग किया गया है।

और गहराई वाले मॉडल उत्तर देखें

4½ / 10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) राजनीति साहित्य नहीं है, उसमें एक-एक क्षण का महत्व है। कभी एक क्षण के लिए भी चूक जाएँ तो बहुत बड़ा अनिष्ट हो सकता है। राजनीतिक जीवन की धुरी में बने रहने के लिए व्यक्ति को बहुत जागरूक रहना पड़ता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पंक्तियाँ 'मोहन राकेश' के 'आषाढ़ का एक दिन' नामक नाटक से ली गई हैं।

व्याख्या ⇒ प्रियंगुमंजरी मल्लिका से राजनीति के बारे में चर्चा करते हुए कहती है कि राजनीति में एक-एक क्षण का महत्व होता है। यदि व्यक्ति एक क्षण के लिए भी चूक जाए, तो उसके अस्तित्व पर संकट उत्पन्न हो जाता है। अतः व्यक्ति को अपने शासन को बचाए रखना है, तो उसे निरंतर जागरूक रहना चाहिए।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

विशेष ⇒ (क) भाषा सरल, सहज एवं बोधगम्य है।
(ख) संवाद शैली का प्रयोग किया गया है।
(ग) सूत्र शैली का भी प्रयोग किया गया है।
(घ) राजनीतिक जटिलताओं का वर्णन किया है।

और गहराई तो
ग्रहण उत्तर दें

5½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ङ) बच्चों की शक्लें और शरारतें तो बहुत पहचानी सी लगती हैं पर गोलगप्पे खाती हुई उनकी मम्मी अजनबी है, क्योंकि उसकी आँखों में मासूमियत और गरिमा से भरा प्यार नहीं है। उसके शरीर में मातृत्व का सौंदर्य और दर्प भी नहीं है। उसमें सिर्फ एक खुमार है और एक बहुत बेमानी और पिटी हुई ललकार है; जिसे न तो नकारा जा सकता है और न स्वीकार किया जा सकता है।

संदर्भ→ प्रस्तुत पंक्तियाँ कमलेश्वर द्वारा रचित "खोई हुई दिशाएँ" नामक कहानी से ली गई हैं।

व्याख्या→ कमलेश्वर प्रौढ़ महिलाओं पर व्यंग्य करते हुए कहते हैं कि बच्चों की शरारतें तो जानी - पहचानी प्रतीत हो रही हैं, किंतु जो उनकी माँ हैं उनका यौवन ढल चुका है, फिर भी वह अपने यौवन बनाए रखने के लिए श्रृंगार करती है। ~~जिससे~~ किंतु उस श्रृंगार से कोई लाभ नहीं है। सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि उनमें मातृत्व का सौंदर्य का भी अभाव है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

विशेष ⇒ (क) व्यंग्य शैली का प्रयोग किया है।

(ख) भाषा सरल, सहज एवं बोधगम्य है।

(ग) जीवन में व्याप्त अकेलापन, एकाकीपन को दर्शाया है।

(घ) आधुनिकता के नकारात्मक प्रभावों को भी स्पष्ट किया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) मोहन राकेश चाहते थे कि 'आषाढ़ का एक दिन' के माध्यम से हिन्दी का एक मौलिक रंगमंच स्थापित करें। इस संबंध में उनकी दृष्टि स्पष्ट करते हुए बताएँ कि वे कहाँ तक सफल हो सके? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मोहन राकेश ने ~~अपन~~ ऐसे नाटकों की रचना की, जो रंगमंच के अनुकूल थे। वस्तुतः प्रसाद जी के नाटकों का मंचन अत्यंत कठिन था। ऐसे में राकेश ने ऐसे नाटकों का सृजन किनको बिना तकनीक एवं सीमित साधनों के मंचित किया जा सकता है।

'आषाढ़ का एक दिन' मोहन राकेश का महत्वपूर्ण नाटक है। इस नाटक को उन्होंने इस प्रकार रचना की उसका मंचन आसानी से हो सके।

आषाढ़ का एक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दिन में 3 अंक एवं (1) दृश्य हैं, इसलिए निर्देशक को बार-बार दृश्य परिवर्तित करने की समस्या नहीं होती है।

'आषाढ़ का एक दिन' नाटक को दो पर्दों, एक टेबल, कुछ पुरानी वस्तुओं के माध्यम से भी मंचित किया जा सकता है।

'आषाढ़ का एक दिन' में ध्वनि योजना संबंधी पर्याप्त संकेत किए गए हैं। उदाहरण के लिए - "बादल गरज रहे हैं; मल्लिका अपना ~~नि~~ निचला होंठ चबाती है।"

'आषाढ़ का एक दिन' में दृश्य संकेत भी पर्याप्त मात्रा में दिए गए हैं। उदाहरण के लिए - "बादल उमड़ आए हैं। अतः दीपक को बुझा दिया जाएगा।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'आषाढ़ का एक दिन' में पात्रों की संख्या अधिक नहीं है तथा कोई भी अवांतर कथा मुख्य कथा पर प्रभावी नहीं हो पाती है। उदाहरण के लिए कश्मीर का प्रसंग केवल चर्चा में आया है। इससे निर्देशक को मंचन में कम समस्या होती है।

आषाढ़ का एक दिन में रंग संकेत भी पर्याप्त मात्रा में आए हैं।

'आषाढ़ का एक दिन' में कोई आकस्मिक घटना नहीं होती है। ऐसी कोई बात होती भी है, तो वह केवल संवादों के माध्यम से।

'आषाढ़ का एक दिन' की संवाद योजना

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मंचन के अनुकूल है। संवाद चुस्त, गतिशील एवं छोटे हैं।

इसी का परिणाम है कि आषाढ़ का एक दिन नाटक वर्तमान का सबसे सफल नाटक है। इसे नुक्ताकाशी मंच पर भी मंचित किया जा सकता है। आषाढ़ का एक दिन नाटक को नुक्कड़ नाटक के रूप में भी खेला गया है, जो कि रचना कला ~~ओं~~ के ~~लिए~~ उद्देश्य को सिद्ध करता है।

अच्छा

11/20

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

(ख) आंचलिक उपन्यासों में 'मैला आंचल' के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास के रूप में समादृत होने में उसकी भाषा-शैली की भूमिका पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

मैला आंचल को हिंदी साहित्य का सर्वश्रेष्ठ आंचलिक उपन्यास माना जाता है। हिन्दी में अनेक लेखकों ने ~~हिंदी~~ आंचलिक उपन्यास लिखे जैसे - बलचनामा, कब तक पुकारूँ, तथा पल्टू बाबू रोड। किंतु इन सबमें रेणु का मैला आंचल सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है। उसमें मैला आंचल की भाषा शैली का महत्वपूर्ण योगदान है +

मैला आंचल में देशज शब्दों का व्यापक प्रयोग किया गया है। जैसे- धमधम, गामकऊआ, इत्यादि।

मैला आंचल में अंग्रेजी शब्द भी देशज रूप धारण कर लेते हैं। जैसे - वाइस चेयरमैन → भैंसचरमन,

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

मैला आंचल की भाषा मात्रानुकूल है। डॉ० प्रशांत की भाषा तद्भव है - और उसमें कहीं - कहीं अंग्रेजी के शब्द भी आते हैं। उदाहरण के लिए "मैंने इस गांव की समस्या के दो कारण खोज लिए हैं।"

रेणु आंचलिक भाषा के माध्यम से ही वहाँ के लोकगीतों का भी उल्लेख करते हैं। जैसे:
"नायक जी हे नायक जी खोल देहो किवड़िया ओ नायक जी।"

रेणु की भाषा में लय एवं ध्वन्यात्मकता देखने को मिलती है। जैसे: धिन, धिन, धिन, धड़ाम, धड़ाम

मैला आंचल की भाषा की विशेषता यह है कि इसमें वह व्यंग्य

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

करने में समर्थ रहे। रेणु ने मैला आंचल में अनेक व्यंग्य किए हैं। जैसे - "बालदेव जी अपने नाम में तलवार नहीं लगाते, क्योंकि इससे हिंसावाद होती है।"

अतः हम कह सकते हैं कि मैला आंचल की भाषा शैली इस उपन्यास के आंचलिकत्व को व्यक्त करने में सफल रही है।

अच्छा

8½/15

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'दिव्या' उपन्यास के महत्त्व पर प्रकाश डालिये।

15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'दिव्या' यशपाल का ऐतिहासिक वातावरण पर आधारित उपन्यास है। दिव्या में यशपाल ने अनेक समस्याओं को उठाया है, तथा उनका समाधान भी सुझाया है।

दिव्या में 'पृथुसेन' के माध्यम वर्ण व्यवस्था संबंधी समस्या को उठाया है। पृथुसेन के धनिक एवं बलशाली होने के बावजूद भी उसे दिव्या की शिविका उठाने नहीं दिया जाता।

दिव्या में यशपाल ने दास व्यवस्था संबंधी समस्या उठाई है। दिव्या स्वयं दास बनती है। इसके अतिरिक्त छाया भी एक दासी है। दासियों की दशा का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि दासियों का उनके बच्चों पर भी अधिकार नहीं है। मातुल के संदर्भ में कथा है -"वह

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दासियों का व्यापार न कर
उनके बच्चों का व्यापार
करता था, जो प्रत्येक
अठारह मास पश्चात
एक बच्चे को जनती थी।"

दिव्या में नारी
पराधीनता को भी उजागर
किया गया है। मारिश वृक
महिलाओं को भोग्या
के रूप में देखता है।
रुद्रधीर कुलनारी, कुलवधु
जैसी उपमा देकर महिलाओं
को पुरुषों के अधीन करना
चाहता है। दिव्या कहती
है - "कुल वधू, कुल नारी
का सम्मान, उसको भोगने
वाले का सम्मान मात्र है।"

दिव्या में यशपाल
में समाज में व्याप्त वर्ग
भेद पर भी चोट की
है।

दिव्या में यशपाल
ने धर्मों में व्याप्त संवेदनहीनता

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

और व्यभिचार का उजागर किया है।

दिव्या में यशपाल ने समस्याओं के समाधान के लिए भी कुछ तथ्यों को सुझाते हैं। उन्होंने नारी के संदर्भ में कहा है कि 'नारी सामाजिक विधान से भोग्या है। तो साथ ही वह प्रत्येक व्यक्ति को परिस्थितियों के अनुसार संचालित होने का विरोध करते हैं। उनका मानना है कि 'मनुष्य भोग्य नहीं करता है।' अर्थात मनुष्य को अपनी परिस्थितियों को बदलने के लिए प्रयास करने चाहिए।

अतः हम कह सकते हैं दिव्या वर्तमान में भी प्रासंगिक है।

और गहराई लाएँ
मॉडल उत्तर देखें
8/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation